ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
- हमारे वीर विजयी हों

वर्ष : 30, अंक 6, 25 जुलाई–अगस्त, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि संवत् 1,96,0853,112

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा ● 10 वर्षीय शुल्क 700 रु. ● वार्षिक शुल्क 70 रु. ● यह अंक 10 रु.

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/–	अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/–
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/–	अन्दर का आधा (सादा)	2500/–
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/–	एक विज्ञापन पट्टी 250/– प्रति पृष्ठ, प्रति अंक	

ऋग्वेद

यजुर्वेद

|| ओ३म् ||

देव दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद

के.एल. महता दयानन्द पब्लिक स्कूल्ज़
के.एल. महता दयानंद महिला महाविद्यालय

देव दयानंद के सच्चे शिष्य बन
शिक्षा का अलख जगाया।
पूर्णाहुति में निज-उत्सर्ग कर
सेवा का धर्म निभाया।
ऋषि के सच्चे पथ पर चलकर
'महात्मा' वह कहलाया।।

महात्मा कन्हैयालाल महता

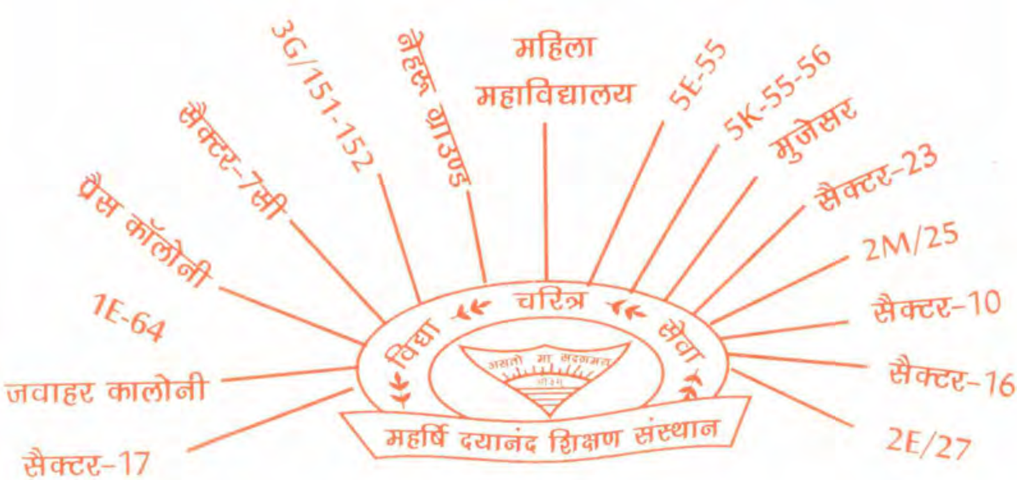

अथर्ववेद

सामवेद

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता- **मनोहर लाल आनन्द**, प्रधान सम्पादक

1. अपना बुरा राज्य विदेशी अच्छे से अच्छे राज्य से अच्छा होता है। **(स्वामी दयानन्द)**
2. हमारे अन्दर पाप के घुसने के दो ही द्वार हैं—आंख और कान। इनको साथ देता है मन, इसलिए भद्र ही देखें और भद्र ही सुने।
3. अधिक नहीं बोलो। ज्यादा नहीं तो दिन में एक घण्टे का मौन रखो। जो वाणी और पानी का दुरुपयोग करता है, वह ईश्वर के प्रति अपराधी है। **(संत डोंगरे)**
4. बुढ़ापे में शरीर की सेवा होती है, समाज सेवा नहीं। प्रभु भक्ति तो क्या होगी।
5. अज्ञान जैसा दूसरा शत्रु नहीं। **(चाणक्य)**
6. जिस मनुष्य में लोभ है, उसे दूसरे दुर्गुणों की क्या आवश्यकता है। **(भर्तहरि)**
7. जल से शरीर शुद्ध होता है, सत्य से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है। **(मनुस्मृति)**
8. शांति का मूलाधार शक्ति है, नीति शास्त्र का यह सार है कि किसी का आंख मूंदकर विश्वास न करें। **(महाभारत)**
9. काम में व्यस्त रहने से स्वास्थय अच्छा रहता है। आलसी का स्वास्थ खराब हो जाता है।
10. जैसा बीजोगे वैसा ही काटोगे। अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा ही होता है।

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

ग्रंथ रचना (सत्यार्थ प्रकाश)

इस अनुपम ग्रंथ की रचना का आधार महर्षि दयानन्द का विशाल शास्त्रज्ञान, व्यापक अनुभव और दिव्य प्रतिभा है।

कार्ल मार्कस ने इंग्लैण्ड में विशाल ग्रंथालय, का उपयोग करके 34 (चौतीस) वर्षो में "केपिटल" ग्रन्थ को पूरा किया। परन्तु महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्‌भुत ग्रन्थ की रचना कितने काल में की वह जानते हो?

साढ़े तीन मास!

हां, मात्र साढ़े तीन मास (महिने) में मौखिक बोलकर महान ग्रंथ की रचना की!

इस मानव निर्माण शास्त्र में 377 ग्रंथों के प्रमाणों को उद्धृत किया, 1542 संस्कृत मंत्र-श्लोकों को लिखा, 1886 प्रमाणों की संख्या प्रस्तुत की। ऋग्वेद से लेकर पूर्वमीमांसा तक लगभग तीन हजार संस्कृत ग्रंथों और भाषा के दूसरे अनेक ऐसे हजारों ग्रन्थों का निचोड़ दर्याया।[1]

----

1. महर्षि दयानन्द भ्रान्ति निवारण में लिखते हैं कि मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेकर पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से लगभग तीन हजार ग्रन्थों को मानता हूँ।

प्रथम चुनौती

– रविचन्द्र गुप्ता

"दीवान जी! शिवलिंग रुद्रसर्ज गंभीर रूप से बीमार है, उसके लिये उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र गोद लेना अत्यावश्यक है। मैंने मास्त मारडी गौडा के पुत्र को गोद लेने के लिये बुलाया है। आप गोद की रस्म की तैयारी कीजिये।"

रानी चेनम्मा की बात का उसके दीवान मलप्पा शेट्टी ने प्रतिवाद किया—"लेकिन रानी साहिबा! गोद लेने के लिये तो धारवाड़ के कलक्टर थैकरे की स्वीकृति लेनी आवश्यक है।"

"कौन होता है थैकरे हमें स्वीकृति देने वाला? गोद लेना या न लेना यह थैकरे की समस्या नहीं है और यह हमारी भी व्यक्तिगत समस्या नहीं है। यह समस्या है कित्तूर की प्रजा की। कित्तूर की प्रजा को अपना भावी राजा उत्तराधिकारी के रूप में चाहिये। यह प्रजा का अधिकार है। इसे प्रजा से कोई नहीं छीन सकता। अतः प्रजा के लिये उत्तराधिकारी नियुक्त करना मेरा परम कर्त्तव्य है।"

दीवान मलप्पा शैट्टी की निगाह रानी के राज्य को हड़पने के लिये लगी हुई थी। लेकिन रानी के कड़े तेवर के आगे वह मजबूर था।

रानी ने एक सादे समारोह में गोद की रस्म पूरी कर दी। शिवलिंग रुद्रसर्ज के दत्तक पुत्र का नाम रखा गया गुरुलिंग मल्लसर्ज। कुछ दिनों बाद शिवलिंग मल्लसर्ज का निधन हो गया। गुरुलिंग मल्लसर्ज अभी बहुत छोटा था। अतः शासन का सारा भार रानी के कंधों पर आ पड़ा।

रानी चेनम्मा के पति मल्लसर्ज की पूना के पेशवा पटवर्धन की कैद में मृत्यु हो गई थी। मल्लसर्ज की दो रानियाँ थीं। एक रुद्रम्मा ओर दूसरी चेनम्मा। छोटी रानी चेनम्मा रूपवती व गुणवती थी। कन्नड़, उर्दू, मराठी व संस्कृत भाषाओं में व युद्धकला में पारंगत थी। रानी चेनम्मा के पुत्र का भी निधन हो चुका था। अतः रानी चेनम्मा ने रुद्रम्मा के पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज को ही अपना पुत्र व उत्तराधिकारी मान लिया था।

रानी के दोनों दीवान मलप्पा शेट्टी और वेंकटराव रानी के प्रति विश्वासघात करके थैकरे से मिल चुके थे। उन्होंने गुरुलिंग मल्लसर्ज को गोद लेने की सूचना थैकरे को पहुँचा दी। ईस्ट इंडिया कम्पनी का तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड एमहर्स्ट राज्यों के साथ छेड़छाड़ की नीति के लिये कुख्यात था। कलक्टर थैकरे ने गुरुलिंग मल्लसर्ज को कित्तूर का उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया। उसने ऊपर अधिकारियों को संदेश भेजा–"कित्तूर की रानी चेनम्मा कित्तूर के खजाने का दुरुपयोग कर रही है। प्रजा के प्रति विमुख हो वह ऐशो–आराम में डूबी रहती है।"

रानी को अंग्रेजों की चाल का पता था। अतः उसने अपने विश्वस्त सैनिक अधिकारियों, नागरिकों व मंत्रियों की गुप्त सभा बुलाई। उस सभा में उसने कहा—"राजा जी के निधन के बाद से कित्तूर को लगातार विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है। शायद विधाता ही हमसे रुष्ट हैं। लेकिन मैं कित्तूर को भाग्य के भरोसे छोड़ कर विपत्तियों से समझौता करने को तैयार नहीं हूँ। मैं उनका डट कर मुकाबला करूँगी। अंग्रेजों के कुचक्रों को मैं कभी सफल होने नहीं दूँगी। अपने कित्तूर पर अंग्रेजों की छाया भी नहीं पड़ने दूँगी। बोलिये इस विषय पर आपकी क्या राय है?"

इस अवसर पर सभी ने रानी का साथ देने का वचन दिया। सम्मानित नागरिकों के सम्मुख वफादार सैनिकों ने शपथ ली—"हम अपने शस्त्रों को साक्षी मानकर शपथ लेते हैं कि कित्तूर की स्वाधीनता की रक्षा के लिये हँस–हँस कर अपने प्राणों का बलिदान कर देंगे लेकिन कित्तूर पर दुश्मन की छाया भी पड़ने न देंगे।"

इस प्रकार के आयोजनों से सारा कित्तूर अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिये रानी चेनम्मा के इशारे पर बलिदान होने के लिये तैयार हो गया। रानी को थैकरे की धमकियाँ मिलनी आरम्भ हो गईं। लेकिन रानी उनकी चिंता किये बिना युद्ध की तैयारियों में लगी रहीं। रानी ने साम्प्रदायिक सौहार्द कायम रखने के लिये एक खंडहर पड़ी मस्जिद का 10 हजार की लागत से जीर्णोद्धार कराया। अपनी सेना को पुनः संगठित किया। घोड़े पर सवार होकर वह स्वयं प्रजा के दुःख-दर्द का हाल जानने के लिये नगर में निकलती तो नगरवासी अपने अभिवादन तथा जयजयकार से रानी के आत्मविश्वास को सम्बल देते।

थैकरे ने रानी को संदेश भेजा—"रानी कित्तूर राज्य पर अपना अधिकार त्याग कर राज्य की बागडोर राज्य के दीवान मलप्पा शेट्टी को सौंप दें।"

इस आदेश के साथ ही कित्तूर के राजकोष पर पहरा बैठा दिया गया। थैकरे ने राज्य में प्रशासनिक पदों पर अधिकारियों की नियुक्ति करनी आरम्भ कर दी।

रानी ने समझ लिया कि अब बलिदान की घड़ी आ पहुँची है। अतः उसने प्रजा को भी सैनिक प्रशिक्षण देना आरम्भ कर दिया। यहाँ तक कि सैदन साहब के बेटे बाला साहब के नेतृत्व में बाल सेना गठित कर उनके प्रशिक्षण का कार्य भी आरम्भ कर दिया गया। कित्तूर का बच्चा-बच्चा अपनी मातृ-भूमि की रक्षा की खातिर सजग हो उठा।

थैकरे के संदेशों का जब रानी ने कोई उत्तर नहीं दिया एवं प्रशासनिक पदों पर नियुक्त अधिकारियों को कार्य नहीं करने दिया तो थैकरे अपनी सेना लेकर कित्तूर पर आ चढ़ा। किले की चारदीवारी व दरवाज़ों पर पहले से ही सख्त पहरा था। दरवाजा न खुल पाया तो थैकरे ने पहरेदारों के माध्यम से रानी को संदेश भेजा—"24 घंटे के अन्दर किले का फाटक न खुला तो उसे तोप से उड़ाकर सेना किले में प्रवेश कर जायेगी।"

इस चौबीस घंटे के समय में रानी ने बड़ी सूझ-बूझ का परिचय दिया। 23 अक्तूबर, 1824 की प्रातःकाल का समय था। रानी ने अपने सैनिकों को एकत्र करके ललकारा—"सैनिको! वह दिन आ गया है जिस दिन के लिये माताएँ अपने वीर पुत्रों को जन्म देती हैं। अभी किले का फाटक खोला जायेगा। फाटक खुलते ही विद्युत की तरह सबसे पहले तोपों पर कब्जा कर उनका मुँह शत्रु की तरफ मोड दो।"

किले का फाटक खुलते ही टिड्डी दल की तरह रानी के सैनिक शत्रु पर टूट पड़े। तोपों का मुँह मोड़ दिया गया। भारी संख्या में कम्पनी के सैनिक मारे गये। रानी के सैनिकों ने इस अवसर का लाभ उठाकर रानी के गद्दार दीवान मलप्पा शेट्टी व वेंकटराव को भी तोप से उड़ा दिया। इस संघर्ष में थैंकरे भी मारा गया। सेनाधिकारी इलियट और स्टीवेंसन पकड़े गये। रानी चेनम्मा के सैनिकों ने अपनी शपथ का निर्वाह करते हुए कित्तूर की रक्षा करने में सफलता प्राप्त की।

रानी चेनम्मा का पलड़ा भारी था। फिर भी रानी ने थैकरे की काली करतूतों एवं गलत सूचना देकर अधिकारियों को धोखे में रखने के बारे में कम्पनी को पत्र लिखा। रानी ने अंग्रेज सेना के दो बड़े अधिकारियों को छोड़ने के लिये शर्त रखी—

1. कम्पनी का कोई अधिकारी भविष्य में कित्तूर की ओर आँख उठाकर भी न देखे।
2. कित्तूर की स्वतंत्रता का सम्मान किया जाय।

कम्पनी ने रानी की शर्तों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अन्दर ही अन्दर कित्तूर से बदला लेने की ठान ली। कम्पनी ने अल्प काल में ही विपुल शक्ति जुटा ली। 30 नवम्बर की प्रातःकाल तक कित्तूर के किले को चारों ओर से घेर लिया। रानी को अन्दर संदेश भेजा गया—"यदि दोनों अधिकारियों को रिहा कर दिया जाये तो आक्रमण टाला जा सकता है।"

रानी चेनम्मा इस बार धोखा खाकर कम्पनी की चाल में फँस गयी। दो दिन तक विचार-विमर्श चलता रहा। रानी ने दोनों तरफ से खून खराबे से बचने के लिये 3 दिसम्ब को दोनों अधिकारियों को मुक्त कर दिया। कम्पनी ने विश्वासघात किया। किले की ओर 200 तोपों के मुँह खोल दिये गये। तोपें आग उगलने

लगीं। 3 दिसम्बर को यह गोलाबारी आरम्भ हुई। 24 घंटे तक धाँय-धाँय करती तोपें आग बरसाती रहीं। फिर भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी। अबकी बार अंग्रेजों को मुम्बई और मद्रास से सैनिक सहायता मँगानी पड़ी। इस अभियान का संचालन डीगस कर रहा था। रानी ने कित्तूर के सैनिकों का मनोबल नहीं गिरने दिया। वह स्वयं सैनिकों के साथ खड़े होकर युद्ध का संचालन कर रही थी। रानी के जाँबाज सैनिकों ने अंग्रेज सैनिकों को पराजित कर लौटने पर बाध्य कर दिया।

अंग्रेजों ने देख लिया कि कित्तूर पर सीधी तरह से विजय पाना असंभव है। अतः उन्होंने अपने गुप्तचरों के माध्यम से कित्तूर के किलेदार शिव वासप्पा को लालच देकर अपने पक्ष में कर लिया। अब की बार दिसम्बर में ही अंग्रेजों ने पुनः आक्रमण किया। गद्दार शिव वासप्पा ने बारुद के ढेर में सूखा गोबर मिलवा दिया। किले के कई भेद भी अंग्रेजों को दे दिये। लेकिन फिर भी रानी गुरु सिद्धप्पा के साथ अन्त तक शत्रु का मुकाबला करती रही। अन्त में वह शत्रुओं से घिर गई और गिरफ्तार कर ली गयी। रानी की ख्याति को देखते हुए अंग्रेजों को भय था कि जनता किसी भी समय विद्रोह कर सकती है। अतः रानी को सख्त पहरे में बेलगाँव के दुर्ग से धारवाड ले जाया जा रहा था। प्रजा को इसका पता चल गया। प्रजा ने विद्रोह कर दिया। लोग अपने जीवन की परवाह किये बिना सैनिकों पर टूट पड़े। रानी को मुक्त कराने का बहुत प्रयत्न किया गया। निहत्थी जनता हथियारों से सुसज्जित सेना के सामने जान पर खेल गयी, लेकिन अपनी प्यारी रानी को मुक्त न करा सकी। धारवाड़ की जेल में ही 21 फरवरी, 1829 को रानी परलोक सिधार गयी। सेनापति सिद्धप्पा को फाँसी पर लटका दिया गया। किसी महिला शासक द्वारा कम्पनी शासन को यह प्रथम चुनौती थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रथम बार 23 अक्तूबर, 1824 को एक भारतीय महिला (रानी) ने विश्व की सबसे बड़ी शक्ति को ललकारा था। अतः दक्षिण भारत में रानी चेनम्मा की याद में यह दिन "महिला दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

(बलिपथ की वीरांगनाओं से साभार)

जिंदगी की पतंग

– प्रो. शामलाल कौशल

जिंदगी की पतंग
अपने सामर्थ्य
के मुताबिक ही
उड़ाना चाहिये।
जितनी हो आमदनी
खर्च ना उससे
कभी भी
बढ़ाना चाहिये।
तोड़ देना हो
जो रिश्ता वो
ना कभी बनाना चाहिये।
शख्स दागदार
हो जो
उसे ना कभी
घर पर लाना चाहिये।
पति पत्नी में
हो जो अनबन
उसे तो हर हाल
में मिटाना चाहिये।
चाहें बच्चों में
अच्छे संस्कार
उन पर हमें
खुद चलकर दिखाना चाहिये।
मन माने
या ना मानें
पड़ोसी धर्म तो
निभाना ही चाहिये।
बच्चों, बुर्जुर्गों
और दुखियों की कर
सेवा पुण्य कमाना चाहिये।
जो हो देश
द्रोही उसे तो
सात समन्दर पार
भगाना चाहिये।
आए देश पर
कोई मुसीबत तो
सर धड़ की
बाजी लगाना चाहिये।
सच्चे को सच्चा
और झूठे को झूठा
कहने में नहीं
मिन्ट लगाना चाहिये।

नन्हा जौहर

– रविचन्द्र गुप्ता

सन् 1857 का ऐतिहासिक वर्ष था। जून माह की प्रचंड गर्मी पड़ रही थी। जगह–जगह से अंग्रेजों के विरुद्ध सैनिक क्रान्ति के समाचार कानपुर की गलियों में पहुँच रहे थे। कानपुर से 12 कि.मी. दूर बिठूर में नाना साहब का महल भी गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था। तभी अचानक भयंकर विस्फोट हुहा। कानपुर की सैनिक छावनी में भी क्रान्ति का शंखनाद हो गया। नाना साहब तो इसी क्षण की बाट जोह रहे थे। उन्होंने भारतीय सैनिकों का नेतृत्व संभाल लिया।

अंग्रेजों के विरुद्ध इस संघर्ष में पहले तो नाना साहब ने विजयश्री का वरण किया लेकिन बाद में कुछ स्वार्थी तत्वों की गद्दारी के कारण उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ा। वे अंग्रेजों से बचते हुए बिठूर और कानपुर से दूर निकल गये। बिठूर के महल में उनकी अल्पवयस्क पुत्री मैना अकेली ही रह गयी।

अंग्रेज सेना नाना साहब को खोजती फिर रही थी। बिठूर में उनके महल की तलाशी ली जा रही थी। अंग्रेज सेनापति 'हे' को ऊपर से आदेश हुआ था कि वह नाना साहब के महल को आग लगा दे। उनकी सम्पत्ति नष्ट कर दे। उनके परिवार में जो कोई भी मिले उसकी हत्या कर दे।

सेनापति 'हे' महल को आग लगाने से पूर्व वहाँ की बहुमूल्य वस्तुओं को लूट लेना चाहता था। तभी अचानक उसकी नज़र एक छोटी–सी बालिका पर पड़ी। वह चौंका, सोचने लगा—"शायद इस बालिका को मैंने कहीं देखा है"। उसे याद नहीं आ रहा था। अतः 'हे' ने बालिका से प्रश्न किया—"तू कौन है छोकरी?"

बालिका तनिक भी भयभीत नहीं थी। उसने उत्तर दिया—"मैं नाना साहब की पुत्री हूँ। आप मुझे पहचानते नहीं?"

"नहीं, मैं नहीं पहचानता। तू मुझे कैसे जानती है?"

"मैं आपकी पुत्री 'मेरी' की सहेली हूँ। जब 'मेरी' जीवित थी तो मैं आपके घर प्रायः आया करती थी।"

'मेरी' का नाम सुनते ही सेनापति 'हे' अपनी पुत्री की यादों में खो गया। वह अभी तक उसके गम को नहीं भुला पाया था। कुछ क्षण बाद वह संभला और दया का भाव दिखाते हुए मैना से बोला—"तुम इस महल से बाहर हो जाओ, मुझे इस महल को जलाने का हुक्म हुआ है।"

"मैं किसी भी हालत में महल को नहीं छोड़ूँगी। मै। आपसे महल को आग न लगाने के लिये प्रार्थना करती हूँ।"

दोनों में यह संवाद चल ही रहा था कि अंग्रेजों का प्रधान सेनापति 'ऑट्रम' वहाँ आ पहुँचा। 'हे' ने प्रधान सेनापति को मैना के बारे में बताया। उसने मैना की प्रार्थना पर महल को आग न लगाने की बात भी कही। ऑट्रम 'हे' की बात पर आग–बबूला हो उठा। उसने 'हे' को कड़ी फटकार लगाई। ऑट्र सोचने लगा—"नाना साहब को पकड़वाने के लिए एक लाख रुपये का इनाम घोषित है। कुमारी मैना ही एकमात्र ऐसा सूत्र है जो नाना साहब का पता बता सकती है।"

ऑट्रम ने मैना को गिरफ्तार कर लिया और महल को तोप से उड़ाने का आदेश दे दिया। मैना को वह अपने साथ कानपुर ले आया और किले में बंद कर दिया।

ऑट्रम के सिर पर एक लाख रुपये का लालच सवार था। लोभवश उसने उस छोटी–सी बालिका पर क्रूरता पूर्वक अनेक अत्याचार किये। कठोर से कठोर यातनाएँ दी गईं। उसने सोचा था कि लड़की थोड़ी धमकी के बाद ही नाना साहब का पता बता देगी। कठोरतम यातनाओं के बाद भी मैना ने कुछ नहीं बताया। उसे खंभे से बाँध कर कोड़ों से पीटा गया, लेकिन सब व्यर्थ रहा। अंत में उसने सैनिकों को आदेश दिया—"फौरन एक चिता तैयार करो। अगर यह अपने बाप का पता नहीं बताती तो इसे जलती चिता में झोंक दो।"

ऑट्रम के आदेश पर चिता तैयार करके उसमें आग लगा दी गई। ऑट्रम ने अंतिम बार प्रयास किया और मैना से कहा—"अब भी तुम नाना साहब का पता

बता दो वरना यह जलती चिता तुम्हारा इंतजार कर रही है।"

"मैं स्वयं चिता में कूदने को तैयार खड़ी हूँ।" मैना ने कड़क कर उत्तर दिया—"मेरा जीवन मेरे पिता से मूल्यवान नहीं है। इसलिये मैं जल कर मर जाना स्वीकार करूँगी लेकिन नाना साहब का पता नहीं बताऊँगी।"

मैना के इतना कहते ही उसे जलती चिता में झोंक दिया गया। कुछ ही देर में वह आग की लपटों से जूझने लगी। ऑट्रम ने उसे चिता से बाहर खींचकर, अधजली अवस्था में एक बार पुनः नाना साहब कापता पूछने का प्रयत्न किया, लेकिन अब वह बोलने की स्थिति में नहीं थी। मैना को पुनः जलती चिता में धकेल कर शोलों के हवाले कर दिया गया। इस घटना के अगले ही दिन महाराष्ट्रीय इतिहासवेत्ता महादेव चिटनवीस के "बाखर" पत्र में एक समाचार छपा—"कल कानपुर के किले में एक भीषण हत्याकाण्ड हो गया।नाना साहब की एक मात्र कन्या मैना को धधकती हुई आग में भस्म कर दिया गया। भीषण अग्नि में शांत और सरल मूर्ति उस अनुपमा बालिका को जलती देख सबने उसे देवी समझ प्रणाम किया।"

इस नन्हीं वीरांगना का जन्म उत्तर प्रदेश में कानपुर से 12 कि.मी. दूर बिठूर के राजमहल में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नायक, वीर सेनानी नाना साहब की पुत्री के रूप में लगभग सन् 1844 ई. में हुआ।

कुमारी मैना अल्पायु में ही शहीद होकर अपने पीछे एक ऐसा आदर्श छोड़ गई जिसका उदाहरण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में मिलना दुर्लभ है। राजस्थान के इतिहास में युद्ध में वीरगति पाने वाले राजपूत शूरवीरों की पत्नियों द्वारा उनके साथ ही जलती चिता में कूद कर जौहर करने की गाथाएँ प्रसिद्ध हैं, किन्तु देश की आज़ादी के लिये लड़ने वाले पिता की रक्षा-हेतु 'जौहर' करने वाली उस वीरांगना पुत्री मैना की यह गाथा कवियों द्वारा गौरव-गान की प्रतीक्षा कर रही है।

(बलिपथ की वीरांगनाओं से साभार)

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
RajniArya
9212307852

उद्‌बोधन

— मैथलीशरण गुप्त

हतभाग्य हिन्दू-जाति! तेरा पूर्वदर्शन है कहाँ?
वह शील, शुद्धाचार, वैभव देख, अब क्या है यहाँ?
क्या जान पड़ती वह कथा अब स्वप्न की-सी है नहीं?
हम हों वही, पर पूर्व-दर्शन दृष्टि आते हैं कहीं?।।1।।

बीती अनेक शताब्दियाँ पर हाय! तू जागी नहीं;
यह कुम्भकर्णी नींद तूने तनिक भी त्यागी नहीं!
देखें कहीं पूर्वज हमारे स्वर्ग से आकर हमें—
आँसू बहावें शोक से, इस वेश में पाकर हमें!! ।।2।।

अब भी समय है जागने का देख आँखें खोल के,
सब जग जगाता है तुझे, जग कर स्वयं जय बोल के।
निःशक्त यद्यपि हो चुकी है किन्तु तू न मरी अभी,
अब भी पुनर्जीवन-प्रदायक साज है सम्मुख सभी।।3।।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, जान लो इसका पता,
जो थे कभी गुरु, है न उनमें शिष्य की भी योग्यता!
जो थे सभी से अग्रगामी, आज पीछे भी नहीं,
है दीखती संसार में विपरीतता ऐसी कहीं? ।।4।।

हे भाइयो! सोये बहुत, अब तो उठो, जागो अहो!
देखो जरा अपनी दशा, आलस्य को त्यागो अहो!
कुछ पार है, क्या क्या समय के उलट फेर न हो चुके!
अब भी सजग होगे न क्या? सर्वस्व तो हो खो चुके।।5।।

विष-पूर्ण ईर्ष्या-द्वेष पहले शीघ्रता से छोड़ दो,
घर फूँकने वाली फुटैली फूट का सिर फोड़ दो।
मालिन्य से मुहँ मोड़ कर मद-मोह के पद तोड़ दो,
टूटे हुए वे प्रेम-बन्धन फिर परस्पर जोड़ दो।।6।।

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो;
है भाग्य की क्या भावना? अब पाठ पौरुष का पढ़ो।
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं!
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं! ।।7।।

जो लोग पाछे थे तुम्हारे, बढ़ गये, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम देव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
हा दैव! क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।8।।

है कार्य ऐसा कौन-सा साधे न जिसको एकता?
देती नहीं अद्‌भुत अलौकिक शक्ति किसको एकता?
दो एक एकादश हुए किसने नहीं देखे सुने?
हाँ, शून्य के भी योग से हैं अंक होते दस गुने।।9।।

प्रत्येक जन प्रत्येक जन को बन्धु अपना जानलो,
सुख-दुःख अपने बन्धुओं का आप अपना मानलो।
सब दुःख यों बँट कर घटेगा सौख्य पावेंगे सभी,
हाँ, शोक में भी सान्त्वना के गीत गावेंगे सभी।।10।।

अति धीरता के साथ अपने कार्य में तत्पर रहो,
आपत्तियों के वार सारे वीर वर बन कर सहो।
सब विघ्न-भय मिट जायँगे, होगी सफलता अन्त में,
फिर कीर्ति फैलेगी हमारी एक वार दिगन्त में।।11।।

हो आप, और सभी जनों को नित्य उत्साहित करो,
उत्पन्न तुम जिसमें हुए, निज देश का कुछ हित करो।
नर-जन्म पाकर लोक में कुछ काम करना चाहिए,
अपना नहीं तो पूर्वजों का नाम करना चाहिए।।12।।

भूलो न ऋषि-सन्तान हो, अब भी तुम्हें यदि ध्यान हो—
तो विश्व को फिर भी तुम्हारी शक्ति का कुछ ज्ञान हो।
बन कर अहो! फिर कर्मयोगी वीर बड़भागी बनो,
परमार्थ के पीछे जगत में स्वार्थ के त्यागी बनो।।13।।

दया की देवियाँ

– मुरारी लाल शर्मा

ज्यों कर्म-कुल में मुकुट-मणि-सा, दान-सा सत्कर्म है।
त्यों ही 'स्नेही' श्रेष्ठ धर्मों में अहिंसा धर्म है।।
–स्नेही

एक जापानी शिकारी को संसार की सब चीज़ों से अधिक तीर चलाने से प्रेम था। उसे चिह्नों पर निशाना लगाने की अपेक्षा, जीवित प्राणियों पर निशाना लगाने में विशेष आनंद आता था।

उस शिकारी की दो पुत्रियाँ थीं। वे दया के अवतार महात्मा बुद्ध की परम भक्त थीं। भगवान् बुद्ध की शिक्षा है कि मनुष्य को दूसरों के प्राण उसी अवस्था में लेने चाहिएँ जब लिये बिना काम ही न चले। इन दोनों लड़कियों का बाप कहने को तो बौद्ध-धर्म का अनुयायी था, परन्तु वह महात्मा बुद्ध की इस दया करने की शिक्षा का, जो उसके स्वभाव के प्रतिकूल थी, पालन न करता था।

दोनों बेटियाँ पिता को अत्याचार करने से रोकने का भरसक प्रयत्न करती थीं। वे कहतीं—"पिता जी! मनुष्य को अपने स्वार्थ के लिए परमात्मा के उत्पन्न किए पशु-पक्षियों के प्राण लेने का कोई अधिकार नहीं।" परन्तु वह क्रूर पिता अपनी पुत्रियों की इस प्रार्थना पर तनिक भी ध्यान न देता था। पुत्रियों का पक्का विश्वास था कि मृत्यु हो जाने पर न्यायकारी परमेश्वर हमारे पिता की आत्मा को अवश्य दंड देगा।

एक दिन शिकारी के एक मित्र ने आकर कहा—"भाई! मेरे बाग के दूसरी ओर की झील पर प्रतिदिन रात्रि के समय दो सारस आते हैं। क्या ही अच्छा हो जो तुम उनका शिकार करो!"

मित्र के मुख से ये शब्द सुनते ही शिकारी के मुँह में पानी भर आया और प्रसन्न होकर बोला—"मैं आज ही रात को उनका शिकार कर लूँगा।"

रात के समय जब अँधेरा छा गया, तब शिकारी झील पर गया और वहाँ दोनों सारसों की राह देखने लगा। थोड़ी देर बाद उसने झील के किनारे फिरती हुई दो सफेद चीजें देखीं। उस स्वार्थी को चट से यह विश्वास हो गया कि ये वही सारस हैं। उसने बड़ी फुर्ती और कुशलता से दो तीर चलाए। तीर लगते ही ये दोनों चीज़ें पृथ्वी पर गिर पड़ीं। ज्योंही वह अत्याचारी भागकर उन्हें उठाने के लिए पहुँचा तो उसने अपनी दोनों बेटियों को मरी पड़ी पाया। इस प्रकार उन दोनों दया की देवियों ने पिता पर प्राणों का मूल्य प्रकट कर दिया।

अपनी प्यारी पुत्रियों के मरने का शिकारी को इतना शोक हुआ कि उसने उसी दिन से शिकार करना छोड़ दिया।

सच्चे बलिदान का अवश्य ही बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell

परदे ही परदे गददे ही गददे

J.K. Singhal
S.K. Singhal

Singhal Furnishing

(Auth. Sleepwell Gallery)

Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.

Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004
Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, S.K. 9891305902

बैंड-मास्टर

— मुरारी लाल शर्मा

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी।
मरो, परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।।
— मैथिलीशरण गुप्त

सेना में भरती होने के समय माइकेल मैगनर की अवस्था केवल 14 वर्ष की थी। सन् 1867 ई. में उसे अफ्रीका महाद्वीप के एबीसीनिया प्रान्त में फौजी बैंड में ताशे बजानेवाला नियत करके भेजा गया।

उन दिनों एबीसीनिया पर एक भयानक थियोडोर का शासन था। थियोडोर बड़ा ही घमंडी और अत्याचारी था। क्रोध में आकर उसने कुछ अंग्रेज़ पादरियों को पकड़कर बेड़ियाँ पहना दीं और कारागार में ठूँस दिया।

स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया ने मित्रभाव से थियोडोर के पास एक राजदूत यह पत्र देकर भेजा—'आप इन पादरियों को मुक्त कर दीजिए।'

अहंकार में चूर थियोडोर ने राजदूत को भी जेल में बंद कर दिया। इस पर विवश हो एक अँगरेज़ी सेना एबीसीनिया के कारागार में पड़े हुए बंदियों को छुड़ाने के लिए भेजनी पड़ी।

इस सेना को बलवान् पहाड़ी लोगों से सुरक्षित 400 मील में फैले हुए जंगल को पार करना पड़ा, परन्तु कुछ महीने के घोर परिश्रम के पश्चात् अंग्रेज़ीसेना ने थियोडोर के मजबूत किले को जा ही घेरा।

यह किला समुद्र के धरातल से 9000 फीट की ऊँचाई पर, एक मील लंबाई और आध मील चौड़ाई में बहुत मजबूत बना हुआ था। इस दुर्ग के भीतर प्रवेश करना सर्वथा असंभव प्रतीत होता था। इस मगडाला नामक प्राकृतिक दुर्ग में प्रवेश करने का एकमात्र ढालू और संकीर्ण मार्ग चारों ओर बड़ी-बड़ी चट्टानों से घिरा हुआ था। अंग्रेजों का यह किला मजबूती में किसी प्रकार भी जिब्राल्टर से कम प्रतीत न होता था। बादशाह थियोडोर को पूर्ण विश्वास था कि दुर्ग कदापि शत्रु के हाथ में नहीं पड़ सकता। इसी कारण वह दुर्ग से दो मील की दूरी पर मैदान में पड़ी हुई अंग्रेज़ी फौज को तुच्छ दृष्टि से देखता था।

सन् 1868 ई. के ईस्टर को चन्द्रवार के दिन दोपहर बाद चार बजे अंग्रेजी छावनी के कुछ सिपाहियों का एक दल किले पर धावा बोलने के लिए चला—पहले इंजिनीयर लोग और उनके पीछे ताशे बजानेवाले माइकेल मैगनर के अधीन 33वाँ रिसाला। सिपाहियों को धावा बोलने की आज्ञा देने के लिए सरदार ढोल पर डंके की चोट लगाने को तैयार प्रतीत होता था।

कुछ देर तक तो सिपाही चुपचाप धीरे-धीरे चट्टानों पर चढ़ते रहे। इतने ही में मूसलाधार वर्षा होनी प्रारंभ हो गई। मगडाला पर छाया हुआ बादल अकस्मात् इतने जोर से गर्जा कि बादल की कड़क के कारण आक्रमण करनेवालों का शब्द सुनाई न पड़ा। परमात्मा की कृपा से यह अच्छा ही हुआ। यदि ऐसा न होता तो सेना का एक-एक सिपाही मारा जाता। कारण, उसी समय घबराए हुए इंजिनीयरों ने आकर सूचना दी—बारूद भूल आने के कारण हम लोग किले का द्वार न तोड़ सके। परन्तु 33वें रिसाले को तो बिना किसी की सहायता के भी किले को जीतना था।

सेना के सिपाही तत्काल इधर-उधर फैल गए और पृथक्-पृथक् अथवा दो-दो की टोली बनकर ऊँची ढालू भयानक चट्टानों पर चढ़ना प्रारंभ कर दिया। पीछे-पीछे ताशेवाला नवयुवक भी चला। वह बिल्ली के बच्चे की तरह झपटता हुआ गोल पत्थरों और झाड़ियों को बड़ी तेज़ी से पार करके सबसे आगे पहुँचा, परन्तु किले का द्वार आ जाने पर उसे रुकना पड़ा। किले की दीवार आठ फीट ऊँची थी और उसमें मेखें लगी हुई थीं।

ताशेवाले नवयुवक ने अपने पास खड़े हुए एक लंबे आइरिश सिपाही से कहा—"जरा मुझे ऊपर को उभारो!" सिपाही ने ज्योंही उसे सहारा दिया, वह चट से दीवार के ऊपर जा खड़ा हुआ। फिर उत्साहजनक हँसी के साथ चारों ओर देखकर चिल्लाया—"मिल गया! रास्ता मिल गया!" यह सुनते ही दो-चार मिनट में ही सब सेना किले के भीतर घुस गई।

कुछ एबीसीनियन सिपाहियों ने इस सेना को गोलियों की बौछार से रोकना चाहा, किन्तु उनकी बंदूकों ने काम न दिया, क्योंकि मूसलाधार वर्षा के कारण उनका सब बारूद

भीग गया था। 15 मिनट के भीतर कभी भी ऐसा मजबूत किया और राज्य न जीता गया था। वीर ताशेवाले युवक के रिसाले की वीरता और जिम्मेवारी का पूर्णतया पालन करने के स्मारकरूप रिसाले का झंडा इस पहाड़ी पर फहरा दिया गया।

जब माइकिल मैगनर लौटकर इंगलैंड पहुँचा तो महारानी विक्टोरिया ने उसे निमंत्रण भेजकर बुलाया। राज्य के प्रतिष्ठित लोगों के सन्मुख बैंड–मास्टर माइकेल मैगनर की छाती पर महारानी ने वीरता–सूचक विक्टोरिया क्रॉस पदक लगाया।

ऐसे ही वीर युवक किसी जाति के मूलधन होते हैं।

शाकाहारी भोजन ही श्रेष्ठ है

– प्रो. शामलाल कौशल

जीवित रहने के लिये भोजन मनुष्य के लिये अनिवार्यता है। आदिकाल में मनुष्य वनों, गुफाओं, पर्वतों आदि पर रहता था तथा कंद–मूल वगैरह खाकर गुज़ारा करता था, फिर वह जंगली जानवरों को मारकर खाने लगा। धीरे–धीरे जिस तरह सभ्यता का विकास होने लगा, वैसे–वैसे मनुष्य के खान–पान तथा रहने के तरीकों में भी परिवर्तन होने लगा। मनुष्य खेती तथा बागबानी करके अनाज, फल, सब्जियाँ आदि अपनी पसंद तथा ज़रूरत की चीजें पैदा करके पेट भरने लगा। यह सब चीजें शाकाहारी भोजन का हिस्सा है। इसके इलावा संसार के अनेक भागों में लोग मांस, मछली, अंडे आदि मांसाहारी भोजन लेते हैं। भारत ऋषियों, मुनियों, संतों, महंतो आदि का देश है जहाँ पर हिन्दु धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म आदि में शाकाहारी भोजन खाने पर ही बल दिया जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि कुछ लोग रोज तो नहीं, हाँ कभी–कभी मांसाहारी भोजन का आनंद उठाते हैं। लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन से हर लिहाज से अच्छा है। शाकाहारी भोजन जैसे गेहूँ, चावल, फल आदि पैदा करने में किसी प्रकार की हिंसा की जरूरत नहीं जबकि मांसाहारी भोजन करते समय पशु, पक्षी आदि को मौत के घाट उतारना अनिवार्य है। किसी जीव की हत्या करके पेट भरा जाये, इसमें कौन सी इनसानियत है। भारतीय दर्शन में अहिंसा का विशेष स्थान होने के पीछे शाकाहारी भेजन ही है। शाकाहारी भोजन पचाने में कोई कठिनाई नहीं होती। जबकि मांसाहारी भोजन पचाने में काफी कठिनाई होती है। मांस–मछली के छोटे–छोटे टुकड़े आमतौर पर मसूड़ों में रह जाते हैं, जिससे दांत जल्दी टूट जाते हैं, पाचन–क्रिया पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। मांसाहारी भोजन खाने से शरीर में कैलस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे हृदय रोग होने का खतरा बढ़ जाता है, इसके इलावा मांसाहारी भोजन गुर्दे, पत्थरी, चमड़े की कई प्रकार की बीमारियाँ भी पैदा करता है। जो लोग मांसाहारी भोजन के साथ शराब का भी सेवन करते हैं उनके लिये तो मांसाहारी भोजन और भी खतरनाक होता है। उन्हें ब्लड प्रैशर, उत्तेजना, टैंशन आदि रोग लग जाते हैं। शाकाहारी भोजन में कई प्रकार के विटामिन, लौह तत्व आदि होते है जो कि शरीर में शक्ति तथा स्फूर्ति पैदा करते हैं जब मांसाहारी भोजन में ऐसी कोई बात नहीं होती। आजकल लोगों में बवासीर, रक्तचाप आदि की बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। अमरूद, टमाटर, खीरा, घीया, ईसबगोल का छिलका दूध आदि शाकाहारी भोजन कब्जी दूर भगाकर इनका इलाज करने में मदद करता है। जबकि मांसाहारी भोजन किसी भी बीमारी का निदान नहीं कर सकता। शाकाहारी भोजन जैसे गेहूँ, चावल, फल, सब्जियाँ, दूध आदि को पैदा करने की लागत बहुत कम है जब मांसाहारी भोजन जैसे पशु, पक्षी, मछलिया आदि पैदा करना महंगा पड़ता है। भारत जैसे निर्धन देश के लिये शाकाहारी भोजन इस दृष्टि से भी बेहतर है। शाकाहारी भोजन सात्विक है जो कि साधु, संतों, ऋषियों, मुनियों आदि के द्वारा प्रयोग किया जाता है जो कि धर्म, अहिंसा, प्रेम, प्यार, सहनशीलता आदि का संदेश देते हैं जबकि मांसाहारी भोजन तामसी है जो कि क्रोध, हिंसा, असंतोष, घृणा, कामवासना आदि को बढ़ावा देता है। श्रीराम, श्री कृष्ण, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, महात्मा गांधी, विनोबा भावे आदि शाकाहारी महापुरुष थे जिन्होंने विश्व को शान्ति, अहिंसा, प्रेम, सहनशीलता तथा बंधुत्व का संदेश दिया। अगर संसार की विभिन्न आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं को हल किया जाना है तो शाकाहारी भोजन को आधार बनाकर ही किया जा सकता है।

मातृ-पितृ भक्त व्यक्तित्व एवं प्रेरक प्रसंग

— सुभाष चन्द्र गुप्ता

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की माँ उनके बचपन में ही परलोक-गमन कर गई थी। परन्तु लिंकन एक मातृ-भक्त बालक थे। उन्होंने अपनी माँ की शिक्षाओं को जीवन में उतारा और एक साधारण श्रमिक से राष्ट्रपति के उच्चतम पद को प्राप्त किया। ऐसी उच्चतम पद-प्रतिष्ठा को पाकर भी, लिंकन के चेहरे पर प्रायः एक उदासी की रेखा उभर आया करती थी। जब एक महिला ने उनसे इसका कारण पूछा, तब लिंकन के नेत्र जल-प्लावित हो उठे। वे अपने नेत्रों को पौंछते हुए, गहरा श्वास लेकर, रुंधे स्वर में बोले—'देवि! मैं शैशव काल में ही मातृ-स्नेह से वंचित हो गया था। मेरी मां बड़ी साध्वी, धर्म-परायणा और अत्यन्त परिश्रमी महिला थी। उसने मेरे हृदय में प्राणिमात्र के प्रति दया, करुणा और सेवा की भावना भरी। आज मेरे जीवन में जो भी गुण हैं, वह उसी की शिक्षाओं के कारण हैं। मैं अमेरिका का सर्वाधिक सुखी व्यक्ति हूँ, परन्तु मुझे जिस क्षण भी अपनी माँ का स्मरण आता है, मेरा मन दुःख से भर जाता है। कितनी अपार श्रद्धा थी राष्ट्रपति लिंकन के हृदय में अपनी माँ के प्रति! माँ के प्रति ऐसा आदर-भाव सचमुच व्यक्ति के जीवन को उज्ज्वल बना देता है।

सर आशुतोष मुकर्जी

सर आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। भारत के वायसराय उनको विलायत भेजना चाहते थे, परन्तु उनकी माँ उनके वहाँ जाने के विरुद्ध थी। मुकर्जी ने अपनी मातृभक्ति का परिचय देते हुए भारत के वायसराय की बात को ठुकरा दिया, जबकि उस काल में वायसराय की नाराजगी मोल लेने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। उनकी अपनी माँ के प्रति ऐसी अपूर्व निष्ठा को देखकर वायसराय भी दंग रह गए।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

बंगाल की महान् विभूति श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की माँ विश्वप्रेम की साक्षात् प्रतिमा थीं। वे दरिद्रों और असहायों की सेवा में लगी रहती थीं। एक बार ईश्वरचन्द्र जी ने घर के लिए छह रजाइयाँ बनवा कर भेजीं। उनकी माँ को जब पता लगा कि पड़ोस में रहने वाले कुछ लोग बिना रजाइयों के ठंड में ठिठुर रहे हैं, तो उसने सारी रजाईयां उनमें बांट दीं। ऐसी परोपकारी माँ ने करुणा, दया और सेवा के भाव अपने बेटे के हृदय में संचारित किए। उन्हीं के कारण विद्यासागर स्वयं ज्ञान के सागर तो बने ही थे, साथ में दया और करुणा के भी सागर बने।

माँ ने छुड़ाए बुरे काम

एक आदर्श माँ अपनी कल्याणमयी शिक्षाओं द्वारा किस प्रकार अपने पुत्र का उद्धार एवं सुधार कर सकती है, इसका उदाहरण निम्न घटना में द्रस्टव्य है—एक पुत्र अपनी माँ की असावधानी के कारण कुसंगत में पड़कर बिगड़ गया। वह डाकू बन गया। अब माँ ने उसे सुधारने का एक अद्भुत उपाय सोचा। जब भी वह पुत्र! किसी के घर में डाका डालकर आता तो माँ कमरे में एक कील गाड़ देती। किसी का खून करता तो एक और गाड़ देती। यह सिलसिला न जाने कब तक चलता रहा। एक दिन पुत्र ने माँ से पूछा, 'माँ, तुमने सारा कमरा कीलों से भर दिया है। यह सब क्या है?' 'पुत्र! ये तुम्हारे बुरे कर्म हैं। जब तू बुरा काम करता, मै। एक कील गाड़ देती थी। अब तो पूरा कमरा कीलों से भर गया है पर....' पुत्र का हृदय पश्चाताप से भर उठा। उस दिन से वह अच्छा काम करने लगा। हर दिन जब वह घर आता माँ को अच्छे कर्म बताता, माँ एक कील उखाड़ देती। कई वर्षों तक ऐसा चलता रहा। एक दिन सभी कीलें उखड़ गयीं, तब पुत्र ने शान से पूछा, 'माँ! अब तो कोई पाप नहीं रहा?' बेटा! कीलें तो सब निकल गयीं पर कीलों के न मिटने वाले दाग दीवार पर रह गये हैं, जो तुम्हारे बुरे कर्मों को हमेशा याद दिलाते रहेंगे, तुम्हें और अच्छे कर्मों की प्रेरणा देते रहेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश की तेजधाराएँ

— प्रा. दयाल आर्य

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल फांसी के तख्त पर चढ़ने से एक दिन पूर्व समाप्त की हुई अपनी आत्मकथा में मानव निर्माण के इस अद्‌भुत ग्रन्थ के विषय में लिखते हैं कि—

"मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे जीवन ही बदल गया, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नया ही पृष्ठ जोड़ दिया।

...... परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि वह मुझे इस देश में जन्म दे जिससे कि मैं उसकी पवित्र वाणी वेदवाणी का अनुपम नाद मनुष्य मात्र के कानों तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँ।

(प. लेख राम)

सत्यार्थ प्रकाश ऐसे परोपकारी मनुष्य के समान है जिसके एक हाथ में औषधि की शीशी और दूसरे हाथ में रोगी के लिये आरोग्यप्रद भोजन लिये हुए है। जिसके उत्तरार्द्ध में औषधि है तो पूर्वार्द्ध में वेदरूपी स्वास्थ्य का मण्डनरूपी आहार रोगी के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

सत्यार्थ प्रकाश खण्डन का ग्रन्थ होने का भ्रम फैलानेवालों को समझ लेना चाहिए कि उत्तरार्द्ध यह रोगी की औषधि है। पूर्वार्द्ध यह स्वस्थ जीवन के लिये अमृत है। अतः स्वास्थ्य के रक्षण के लिये, बीमारी को दूर करने के लिये दोनों की परम आवश्यकता है।

(विनायक दामोदर वीर सावरकर)

"सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई धर्मावलंबी अपने मत की बड़ाई मार नहीं सकता। हिन्दु जाति की ठण्डी नसों में गरम लहु का संचार करनेहारा यह ग्रन्थ अमर रहे यही मेरी कामना है।"

(लाला लाजपत राय)

"गुरुदेव दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश मेरे जीवन में प्रकाश करनेवाला "सूर्य समान है"

(सी.एफ. अंड्रयूज)

मैंने भारत में आकर सच्चे हिन्दु धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से प्राप्त किया है। कारण कि मार्ग भूले भटके मनुष्य के लिये यह 'पथ प्रदर्शक' है।"

मिट्टी द्वारा इलाज

— आशा चड्डा

सत्य है धरती मेरी माँ। क्योंकि जिस भी कोण से देखा जाए, धरती ने हमेशा हमें दिया ही है। आज जीवन यापन के साधन भी धरती माँ की देन है। धरती को रहने के लिए स्थान भी धरती ही देती है। यही नहीं धरती अपनी गोद में और भी गुण छिपाए हुए है जिनका प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है और वह भी सस्ती दर पर—

मिट्टी द्वारा इलाज

अकसर बच्चों के शरीर व टाँगों पर बाजू पर फोड़े-फुन्सियाँ या गाँठ इत्यादि हो जाते हैं। इस तकलीफ का इलाज बहुत ही उमदा व सस्ता है। कुछ मिट्टी लीजिए जो साफ हो। यानि जमीन से कम से कम 10-15 फीट नीचे की मिट्टी हो। ताकि कोई भी गन्दगी उसमें शामिल न हो। उसे छान लीजिए। फिर उसे एक परात में डालकर उसमें थोड़ा नमक मिलाए और नरम नरम आटे की तरह गूँथ ले। फिर उसकी लोईयां बना लें और तकलीफ के स्थान पर रखें। हर घंटे में यह लोईयाँ बदल ले। तकलीफ की सूजन व दर्द मिट्टी खींच लेती है और दर्द कम होकर आराम मिलता है। दिन में लगभग 5 बार यह इलाज करें और 3-4 दिनों तक। शतप्रतिशत 99-95 प्रतिशत आराम मिलेगा। जिससे अंग्रेजी दवाओं की जरूरत नहीं पड़ेगी।

आर्यवीर दल का रोहतक में शिविर

स्तूप निर्माण का एक दृश्य

आर्य वीर दल, रोहतक मंडल के तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर दि. 8.6.2015 से 14.6.2015 तक बलिदान भवन एवं चौ. लखीराम आर्य अनाथालय में आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन दि. 8.6.2015 को सायं 6 बजे यज्ञोपरान्त आ. बलदेव जी संरक्षक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। श्री वेद प्रकाश आर्य महामंत्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा एवं देशराज आर्य मंडलपति भी उपस्थित थे। पूज्य आ. बलदेव जी ने शिविर में उपस्थित 126 युवाओं को अपने सभी दुर्गुणों व दुर्व्यसनों को छोड़ कर सामाजिक व्यवस्था को सुधारने का आह्वान किया और शिविर की सफलता की शुभकामनायें दीं। उदघाटन समय श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री मुलखराज आर्य, श्री सतीश आर्य तथा आर्य युवाओं के अभिभावक भी उपस्थित थे।

इस सात दिवसीय शिविर में जहाँ शिविरार्थियों ने योगासन, प्राणायाम, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम, लाठी संचालन, दंड-बैठक आदि योग्य शिक्षकों सर्वश्री प्रमोद आर्य, बीर सिंह आर्य, मुकेश आर्य, तेजपाल आर्य,म ंजीत आर्य आदि से सीखें वहाँ उन्हें संध्या, हवन, आर्य समाज के नियम तथा वेध्दक संस्कृति के आधार वेद-उपनिषद आदि से भी परिचय कराया गया। मुख्य रूप से आर्य वीर दल के प्रथम पाठयक्रमानुसार आर्य वीर दल का उद्देश्य, इतिहास तथा आर्यसमाजों से जुड़कर आर्य वीर दल की शाखायें गांव व नगरों में चलाने हेतु प्रेरणा दी गई। शिविर के अंतर्गत बौद्धिक कक्षाओं में युवाओं को आ. वेदमित्र जी, डा. सुरेन्द्र कुमार जी, डा. धर्मपाल आर्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री उमेद सिंह शर्मा, डा. जगदेव सिंह जी, श्री धर्म देव जी, देशराज आर्य, ओमप्रकाशअ ार्य, आ. रामपाल आर्य, महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री सुशील आर्य, श्री दयानन्द आर्य आदि ने भी सम्बोधित किया। अंतिम दिन 15.6.15 को 10 से डेढ़ बजे तक समापन समारोह में आर्य वीरों का प्रदर्शन देखकर उपस्थित नर-नारि तालियों की गड़गड़ाहट से अभिभूत हो गये।

सूर्य नमस्कार योगासन का एक दृश्य

अंत में पुरस्कार वितरण समारोह में नगर पार्षद श्री अशोक खुराना तथा नगर की आर्य समाजों के अधिकारियों ने विभिन्न मदों के विजेताओं को स्मृति चिह्न तथा वैदिक साहित्य देकर प्रोत्साहित किया।

– देशराज आर्य, मण्डलपति

आर्यवीर दल का रोहतक में शिविर

संगठनात्मक दृश्य (एक स्तूप) का प्रदर्शन करती आर्य वीरांगनायें

आर्य वीर दल, रोहतक मंडल के तत्वावधान में युवतियों के लिये एक चरित्र निर्माण एवं योगसाधना शिविर दि. 15 जून से 21 जून 2015 तक वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक में आयोजित किया गया। जिसमें रोहतक नगर तथा समीपस्थ हरियाणा के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से 126 कन्याओं ने वैदिक संस्कृति की रक्षा हेतु पांच महायज्ञों का करना, शक्ति संचय एवं आत्म रक्षा हेतु शारीरिक व्यायाम, योगआसन, नियुद्धम (जूडो कराटे), लाठी, तलवार चलाना, जम्परोप आदि योग्य शिक्षिकाओं कु. दीप शिखा, कु. कीर्ति, कु. सिमरन तथा कु. प्राची आदि से सीखे। शिविर की संयोजिका श्रीमती दयावती तथा उनका सहयोग श्रीमती सरोज कुमारी, श्रीमती प्रमोद, श्रीमती कृष्णा, श्रीमती पुष्पा आदि ने दिन-रात कन्याओं की सुरक्षा एवं शिक्षा में पूरा सहयोग दिया। सुन्दर भोजन व्यवस्था श्री मुलराज आर्य ने की। कन्याओं को सेवा सुश्रुषा का पाठ भी पढ़ाया गया। आर्य वीरांगनाओं को हवन-संध्या, भाषण तथा संगीत आदि का प्रशिक्षण भी दिया गया। बौद्धिक विकास हेतु समय-समय पर आ. वेदमित्र जी, डा. जगदेव सिंह जी, बहिन दयावती जी, शर्मिष्ठा जी, वेद प्रकाश जी, देशराज आर्य, ओम्प्रकाश आर्य, ब्र. सत्यकाम जी, श्रीमती निर्मल गुगनानी जी आदि ने विभिन्न विषयों पर कन्याओं का मार्गदर्शन किया। इन विद्वानों ने शिविरार्थी कन्याओं को भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बालविवाह, शरीरधारी गुरुओं द्वारा फैलाये जा रहे पाखंड से दूर रहने का पाठ पढ़ाया। चमत्कारों का खंडन (भांडाफोड़) विषय पर ज्ञान विज्ञान समिति की ओर से श्री ब्रह्मदत्त जी का कार्यक्रम भी रखा गया। दि. 21.6.2015 को अंतर्राष्ट्रीय योगदिवस पर समापन समारोह में कन्याओं के गीत व भाषण के अतिरिक्त सर्वांगसुन्दर व्यायाम, नियुद्धम, लाठी, तलवार संचालन, स्तूप निर्माण का प्रदर्शन किया गया। प्रातःकाल सभी कन्याओं को यज्ञोपवीत दिया गया तथा मुख्य वक्ता श्रीमती लक्ष्मी भारती प्राचार्या गुरुकुल संजूमा (कैथल) ने यज्ञोपवीत का महत्व बताया। सभी कन्याओं को संस्कृति की रक्षा, शक्ति संचय एवं सेवा के आर्य वीरांगनाओं के लक्ष्य से जुड़े रहने का संकल्प देशराज आर्य मण्डलपति ने कराया तथा व्रत दिलाया कि वे सामाजिक कुरीतियों का विरोध करेंगी, आर्य समाज तथा वीरांगनाओं के कार्यक्रमों में भाग लेती रहेंगी। विजेता वीरांगनाओं को पुरस्कार भी दिये गये। गुरुकुल संजूमा की विद्यार्थी कु. लक्ष्मी को सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से अलंकृत किया गया। ध्वजगान, ध्वजावतरण तथा शांतिपाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

नियुद्धम (जूडो कराटे) द्वारा स्वरक्षा का प्रदर्शन

– देशराज आर्य, मण्डलपति

गुरुकुल कालवा (जीन्द) में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

गुरुकुल कालवा (जीन्द) में 15 जून से 21 जून तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी, स्वामी सोमानन्द जी और आचार्य कर्मवीर मेधार्थी के कुशल मार्गदर्शन में यह शिविर अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य वीर दल जीन्द के इस जिला स्तरीय शिविर में अनेक गाँवों से 400 के लगभग आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर के उद्घाटन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, आर्य वीर दल हरयाणा के महामन्त्री वेदप्रकाश आर्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य ऋषिपाल जी आर्य, आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक हरिसिंह जी आर्य मौजूद रहे। ध्वजारोहण के द्वारा शिविर का उद्घाटन किया गया।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति व्यायाम शिक्षक यज्ञवीर आर्य और आर्य वीर दल के अन्य सुयोग्य व्यायाम शिक्षकों विजय आर्य (मध्य प्रदेश), महावीर आर्य (पानीपत), छत्रपाल आर्य (करनाल), नरेन्द्र आर्य (बागपत), फरीदाबाद के शिक्षको श्याम आर्य, मनीष आर्य, संदीप आर्य, सचिन आर्य के निर्देशन में आर्य वीरो ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, लाठी, तलवार, छुरी, भाला, आसन आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुड़गाँव के कर्नल रघबीर सिंह ने आसन और प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। साथ ही उन्होंने एक्यूप्रेशर से सम्बंधित उपयोगी जानकारी भी आर्यवीरों को दी। आर्य वीर दल जीन्द के व्यायाम शिक्षक कर्णदेव शास्त्री एवं परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी (हिसार) प्राचार्य आचार्य राजकिशोर शास्त्री ने भी समय निकालकर प्रशिक्षण कार्य में सहयोग दिया।

गुरुकुल कालवा के आचार्य और शिविर के आयोजक आचार्य राजेन्द्र ने बताया कि युवकों का चरित्र निर्माण और उन्हें सही दिशा देना आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। बच्चों का सर्वांगीण विकास ही हमारा ध्येय है। इसी को ध्यान में रखते हुए गुरुकुल कालवा द्वारा सात दिवसीय व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में आत्मिक विकास के लिए प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ (संध्या) और देवयज्ञ (हवन) का कार्यक्रम हुआ। साथ ही भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शों के बारे में भी बताया गया। शिविर के दौरान विभिन्न दिनों में आर्य विद्वानो के प्रवचनों एवं उपदेशों से आर्यवीरों को बौद्धिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

आर्य वीर दल हरयाणा के पूर्व उपसंचालक और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उप मंत्री प्रो. ओमकुमार आर्य, आर्य वीर दल हरयाणा के कोषाध्यक्ष कर्ण सिंह आर्य, आर्य वीर दल

के शिक्षक शमशेर आर्य, वेद प्रचार मंडल जीन्द के पूर्व महामन्त्री रमेश आर्य,प्रचार मंत्री ईश्वर आर्य विभिन्न दिवसों में उपस्थित रहे।

19 जून को जीन्द के पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक जोरवाल ने गुरुकुल परिसर में चल रहे शिविर में युवाओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया। वे काफी समय तक आर्य वीरों के बीच रहे और उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में भी युवाओं को लगातार आर्य समाज के संपर्क में रहने की प्रेरणा दी।

20 जून को पिल्लूखेड़ा मंडी में शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। आर्य वीरों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया और लोगों को दाँतो तले अँगुली दबाने को मजबूर कर दिया। गीतों और नारों ने सभी में जोश और उत्साह का संचार किया। सभी लोगों ने गुरुकुल कालवा में आयोजित युवा निर्माण के इस कार्य की प्रशंसा की।

21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शिविर का समापन हुआ। भारत स्वाभिमान केप्रान्तीय प्रभारी रहे त्रिलोक चन्द जी शर्मा समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सरलता व विनम्रता के पर्याय आचार्य बलदेव जी का आशीर्वाद भी सभी को प्राप्त हुआ। उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि योग करने से हम जीवन भर निरोग रह सकते हैं। इससे हमें शारीरिक, आत्मिक और आध्यात्मिक बल मिलता है। इसलिए हमें योग को अपने दैनिक जीवन का अंग बनाना चाहिए। आर्यवीरों ने अपने प्रदर्शन से सभी को रोमांचित कर दिया। इस अवसर पर गुरुकुल कुम्भखेड़ा के कुलपति आचार्य

आत्मप्रकाश, भारतीय संस्कृति रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी महेश आर्य, स्वामी कर्मपाल, आर्य समाज सफीदों के प्रधान यादविंद्र बराड़, मंत्री संजीव मुआना, जगदीश आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

– यज्ञवीर आर्य, मण्डलपति

शिक्षा का उद्देश्य

– आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानव का निर्माण है। मानव जो अच्छी नौकरी पाकर अपना अपने परिवार का निर्वाह कर सके, यही शिक्षा के क्रम को विराम नहीं मिलता। मनीषियों ने संदेश दिया है, "मनुर्भव।" ऐसा मनुष्य बन, जो मनन करे। समाज से जो प्राप्त करे, उसे ऋण समझ, शरीर बुद्धि और मन से उसे उतारने को तत्पर रहे—समाज के लिए समर्पित होकर। नैतिक मूल्यों को स्वीकार करने पर ही यह सम्भव है। शिक्षा देने वाला आचार्य पढ़ाता है, इसलिए आचार्य नहीं है। वह आचार ग्रहण कराता है, शिष्य को गर्भ में रखकर। गुरु शिष्य सम्बन्ध की इससे अधिक पावनता, निकटता हम सोच नहीं सकते।

यह विश्व ज्ञान के पुष्पों का उद्यान है—अनेक विद्याओं के रंग हैं। इनका हम निहार करें, विहार करें। जिज्ञासा की हमारी आराम से न बैठने वाली मधुमक्खी, इन फलों में मधु ले और उससे हमारे ही नहीं औरों के जीवन को भी मधुमय बनाये हम अपने को स्वतन्त्र निखरने दें, बिखरने दें—यही ध्येय है शिक्षा का – **सा विद्या या विमुक्तये।**

सभी मनुष्यों में उर्जा छिपी होती है

सभी मनुष्यों में उर्जा छिपी होती है, परन्तु अधिकांश अभागे व्यक्ति, स्वयं इससे परिचित नहीं हैं, जो संकल्प, इच्छा, क्षमता और योग्यता उर्जा रूप में उनमें निहित है। अग्नि के सम्पर्क में आने से उनमें अग्रेषणा की जीवन्तता आती है। न दबने की संकल्पशक्ति उदबुद्ध होती है। दोलायमानता निवृत होती है।

विश्वास का सूर्य प्रखरता से भासित होकर ख्याति की वह आभा सामने लाता है—जो हमसे मात्र एक हाथ की दूरी पर है। जिसे हम पकड़ सकते हैं।

•

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामया:

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग-अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

– चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

खांडा खेड़ी (हिसार) में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी (हिसार) में 25 जून से 30 जून तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गुरुकुल के प्राचार्य आचार्य राजकिशोर शास्त्री और परम मित्र विद्या निकेतन के प्राचार्य देवेन्द्र जी के कुशल मार्गदर्शन में यह शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। परम मित्र मानव निर्माण संस्थान द्वारा आयोजित आर्य वीर दल के इस शिविर में अनेक गाँवों से 100 के लगभग आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भारतीय संस्कृति रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा ध्वजारोहण के साथ शिविर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि केवल आर्य समाज और उसका युवा संगठन आर्य वीर दल ही युवाओं को सही दिशा में आगे ले सकता है। वैदिक विचारधारा पर चलकर ही हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य और आर्य वीर दल के अन्य सुयोग्य व्यायाम शिक्षको श्याम आर्य, मनीष आर्य, संदीप आर्य, नन्दकिशोर आर्य के निर्देशन में आर्य वीरो ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, लाठी, तलवार, छुरी, भाला, आसन और प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में आत्मिक विकास के लिए प्रतिदिन संध्या हवन का कार्यक्रम हुआ। साथ ही भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शों के बारे में भी बताया गया। शिविर के दौरान विभिन्न दिनों में आर्य विद्वानों के प्रवचनों एवं उपदेशों से आर्यवीरों को बौद्धिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ। आर्य वीर दल हरयाणा के पूर्व उपसंचालक और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमंत्री प्रो. ओमकुमार आर्य ने भी आर्य वीरों को बौद्धिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए उन्हें आर्य सिद्धान्तो के विषय में बताया।

भारतीय जनता पार्टी के नारनौंद हल्काप्रभारी अजय सिंधु ने भी शिविर का दौरा कर आर्यवीरों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने आर्यवीरों को हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने और अपने जीवन में वैदिक सिद्धान्तों के लिए प्रेरित किया। 29 जून को गाँव में शोभायात्रा का आयोजन किया गया। गीतों और नारों ने सभी में जोश और उत्साह का संचार किया।सभी लोगों ने गुरुकुल में आयोजित युवा निर्माण के इस शिविर की प्रशंसा की।

30 जून को शिविर का समापन हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल कालवा से स्वामी सोमानन्द, भारतीय संस्कृति रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानन्द, परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी के पूर्व प्राचार्य आचार्य अजय जी आर्य, परम मित्र विद्या निकेतन के प्राचार्य देवेन्द्र जी, बी.एड. कॉलेज की प्रिंसीपल डा. सुनीला मलिक सहित विद्यालय के स्टॉफ के अनेक सदस्य, आर्य समाज के अधिकारी गण और गाँव के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्यवीरों ने अपने प्रदर्शन से सभी को रोमांचित कर दिया। कार्यक्रम के अंत में आर्यवीरों को पुरस्कार वितरित किये गए। भगवान दास आर्य, विजेन्द्र आर्य, विजय आर्य आदि कार्यकर्ताओं और सहयोगियों ने रात-दिन मेहनत कर शिविर को सफल बनाया।

HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्
श्रीमान्/श्रीमती

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद–121 006

उजली व चमकदार धुलाई
हाथ सुरक्षित
वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : पुनीत उद्योग
37–E, सैक्टर 6, फरीदाबाद–121006
दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :–
उत्तम कैमीकल उद्योग
प्लाट नं. 309, सैक्टर–24, फरीदाबाद पिन –, 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'XYZ OFFSET PRINTERS', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद–121006 से प्रेषित।